Gyanvividha, Vol.-3; Issue-3 (July-September) 2026 : PP-44-55

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विषयों की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध-पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-6.125
Vol.-3; Issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No.- 44-55
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

संतोष कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

संतोष कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

परंपरा का पुनर्जागरण : छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों द्वारा विरासत का संरक्षण और नवीनीकरण

सारांश : यह शोध-पत्र छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और नवीनीकरण की प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में पाया गया कि छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक कला परंपराएँ-जिनमें आदिवासी चित्रकला, पारंपरिक वाद्ययंत्र निर्माण, वाचिक कथा परंपराएँ, और लोक नृत्य-संगीत शामिल हैं-आधुनिकीकरण और प्रवासन के कारण लुप्त होने के खतरे में थीं। हालाँकि, अनेक लोक कलाकारों, सरकारी पहलों और सामुदायिक प्रयासों ने इन परंपराओं को पुनर्जीवित किया है। शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि लोक कलाकारों द्वारा 'परंपरा का पुनर्जागरण' एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें कला के पारंपरिक स्वरूपों को संरक्षित करने के साथ-साथ उन्हें समकालीन संदर्भों में नवीनीकृत किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : लोककला एवं विरासत, सांस्कृतिक संरक्षण, नवीनीकरण एवं पुनर्जागरण, सामुदायिक पहचान एवं सशक्तीकरण, चुनौतियाँ एवं सतत विकास।

1. परिचय

1.1 पृष्ठभूमि : छत्तीसगढ़, जिसे 'लोक कला और संस्कृति का राज्य' कहा जाता है, अपनी विविध जनजातीय परंपराओं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ की लोक कला सदियों पुरानी है और आदिवासी समुदायों के दैनिक जीवन, आस्था, त्योहारों और प्राकृतिक परिवेश से गहराई से जुड़ी हुई है। बस्तर की लकड़ी की नक्काशी, ओराँव जनजाति की भित्ति चित्रकला, गोंड और मुरिया जनजातियों के पारंपरिक वाद्ययंत्र, पंडवानी की गायिकी, और नाचा जैसे लोक नृत्य-ये सभी छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान के अभिन्न अंग हैं। तथापि, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, और युवा पीढ़ी के प्रवासन के कारण ये पारंपरिक कला-रूप लुप्त होने के गंभीर खतरे में हैं। युवा पीढ़ी

अपनी सांस्कृतिक विरासत से दूर होती जा रही है, और कई कला-रूप केवल कुछ चुनिंदा कलाकारों तक सीमित रह गए हैं। इसी संदर्भ में, लोक कलाकारों, सरकारी पहलों, और सामुदायिक संगठनों द्वारा 'परंपरा के पुनर्जागरण' के प्रयास विशेष महत्व रखते हैं।

1.2 शोध उद्देश्य :

1. छत्तीसगढ़ की प्रमुख लोक कला परंपराओं का दस्तावेजीकरण करना।
2. लोक कलाकारों द्वारा विरासत संरक्षण और नवीनीकरण की रणनीतियों का विश्लेषण करना।
3. सरकारी और सामुदायिक पहलों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. 'बस्तर पंडुम' और 'लोक कला महोत्सव' जैसे आयोजनों के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.3 शोध प्रश्न

1. छत्तीसगढ़ की कौन-सी लोक कला परंपराएँ लुप्त होने के खतरे में हैं?
2. लोक कलाकार अपनी विरासत को किस प्रकार संरक्षित और नवीनीकृत कर रहे हैं?
3. सरकारी योजनाओं और महोत्सवों ने इन प्रयासों को किस प्रकार बल दिया है?
4. युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने में क्या चुनौतियाँ और अवसर हैं?

1.4 शोध सीमाएँ : यह शोध मुख्यतः उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों, सरकारी रिपोर्टों और प्रकाशित सामग्रियों पर आधारित है। क्षेत्रीय अध्ययन की अनुपलब्धता और कुछ दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों के विशिष्ट आँकड़ों तक सीमित पहुँच इस शोध की प्रमुख सीमाएँ हैं।

2. साहित्य समीक्षा : छत्तीसगढ़ की लोक कला परंपराओं का अध्ययन किसी भी शोध का अभिन्न अंग है, क्योंकि यह राज्य की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और नवीनीकरण की दिशा में उठाए गए कदमों को समझने का आधार प्रदान करता है। यह साहित्य समीक्षा विभिन्न स्रोतों-सरकारी दस्तावेजों, शोध पत्रों, समाचार रिपोर्टों और ऐतिहासिक अभिलेखों-के आधार पर तैयार की गई है।

2.1 छत्तीसगढ़ की लोक कला परंपराएँ : छत्तीसगढ़ की लोक कला परंपराएँ अत्यंत विविध और समृद्ध हैं। राज्य में 35 से अधिक बड़ी और छोटी जनजातियाँ फैली हुई हैं, जिनकी अपनी अनूठी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हैं। इन परंपराओं को मुख्यतः चार व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: दृश्य कला (चित्रकला और शिल्प), वाद्ययंत्र निर्माण, वाचिक परंपराएँ (लोक गाथागीत और कथावाचन), और प्रदर्शन कला (नृत्य-नाट्य)।

2.1.1 दृश्य कला : छत्तीसगढ़ की दृश्य कला परंपराएँ सदियों पुरानी हैं और आदिवासी समुदायों के दैनिक जीवन, आस्था, त्योहारों और प्राकृतिक परिवेश से गहराई से जुड़ी हुई हैं।

ओराँव भित्ति चित्रकला: ओराँव जनजाति की यह परंपरा प्राकृतिक सामग्रियों-काली मिट्टी, हरी पत्तियों, और अन्य प्राकृतिक रंगों-से बनाई जाती है। इसमें आदिवासी जीवन, त्योहार, कृषि, और करमा वृक्ष की पूजा को चित्रित किया जाता है। पारंपरिक रूप से इसे उँगलियों से दाएँ से बाएँ दिशा में बनाया जाता था, जिसे 'ओराँव बन्ना' कहा जाता है। यह कला अब केवल कुछ चुनिंदा कलाकारों-जैसे जशपुर की अनामिका भगत और उनकी बड़ी बहन सुमंती देवी-तक सीमित रह गई है, जो अपने गाँव की एकमात्र सक्रिय ओराँव कलाकार हैं।

राजवार भित्ति: यह पारंपरिक छत्तीसगढ़ी लोक कला है, जिसमें मिट्टी और प्राकृतिक रंगों से घरों, दीवारों और अन्य वस्तुओं को सजाया जाता है। यह कला मुख्यतः ग्रामीण महिलाओं द्वारा की जाती है और इसमें ज्यामितीय आकृतियों, फूल-पत्तियों, और पारंपरिक प्रतीकों का चित्रण किया जाता है।

बस्तर की लकड़ी नक्काशी: बस्तर क्षेत्र अपनी लकड़ी की नक्काशी के लिए विश्वप्रसिद्ध है। यह कला 10वीं शताब्दी ईस्वी से प्रचलित है, जब पत्थर की नक्काशी के स्थान पर लकड़ी की नक्काशी ने महत्व प्राप्त किया। शीशम, सागौन, और शिवना जैसी लकड़ियों पर हाथ के औजारों से आदिवासी जीवन, नृत्य, धार्मिक अनुष्ठान, और दैनिक गतिविधियों

को उकेरा जाता है । बस्तर जिला वनों से ढका हुआ है और यहाँ आदिवासी समुदाय का बड़ा हिस्सा निवास करता है। बस्तर के कला कौशल को मुख्य रूप से काष्ठ कला, बाँस कला, मृदा कला, और धातु कला में विभाजित किया जा सकता है :

- **काष्ठ कला:** लकड़ी के फर्नीचरों में बस्तर की संस्कृति, त्योहारों, जीव-जंतुओं, देवी-देवताओं की कलाकृतियाँ, मूर्तियाँ, और साज-सज्जा की वस्तुएँ बनाई जाती हैं ।
- **बाँस कला:** बाँस की शीखों से कुर्सियाँ, बैठक, टेबल, टोकरियाँ, चटाई, और घरेलू साज-सज्जा की सामग्री बनाई जाती है ।
- **मृदा कला:** देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, सजावटी बर्तन, फूलदान, गमले, और घरेलू साज-सज्जा की सामग्री बनाई जाती है ।
- **धातु कला:** ताँबे और टिन मिश्रित धातु की ढलाई से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, पूजा-पात्र, जनजातीय संस्कृति की मूर्तियाँ, और घरेलू साज-सज्जा की सामग्री बनाई जाती है ।

आदिवासी भारत के पहले धातु शिल्पकार थे और वे अभी भी प्राचीन प्रक्रियाओं के साथ जारी हैं। ये कलाकार धातु की पुरानी प्रक्रियाओं के माध्यम से जीवन, प्रकृति और देवताओं के अनूठे दृश्य को लोहे में उकेरते हैं ।

2.1.2 वाद्ययंत्र निर्माण : पंडिराम मंडावी जैसे कलाकार पाँच दशकों से गोंड और मुरिया जनजातियों के पारंपरिक वाद्ययंत्रों-मादर, बाना, और नगाड़ा-का निर्माण स्थानीय लकड़ी और पारंपरिक तकनीकों से कर रहे हैं । ये वाद्ययंत्र न केवल कार्यात्मक हैं, बल्कि बस्तर के आदिवासी समुदायों के अनुष्ठानों और लोक परंपराओं में गहराई से निहित हैं। ये वाद्ययंत्र बस्तर की सांस्कृतिक विरासत के जीवंत प्रतीक हैं। वर्ष 2025 में पंडिराम मंडावी को पद्मश्री से सम्मानित किया गया, जो उनके योगदान की राष्ट्रीय मान्यता है ।

2.1.3 वाचिक परंपराएँ : छत्तीसगढ़ की वाचिक परंपराएँ राज्य की सांस्कृतिक विरासत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित कथाएँ, गीत, और महाकाव्य शामिल हैं।

वासुदेव कथा: वासुदेव समुदाय के व्यावसायिक कथावाचक भागवत पुराण की कथाएँ सुनाते थे। यह परंपरा अब लुप्त हो रही है। वासुदेव अपनी कथा परंपरा को समकालीन स्वरूप नहीं दे पाए हैं, जिससे यह कला विलुप्ति के कगार पर है । साहित्य समीक्षा से पता चलता है कि यह परंपरा केवल कुछ चुनिंदा कलाकारों-जैसे रामप्रसाद वासुदेव-तक सीमित रह गई है ।

पंडवानी: पंडवानी छत्तीसगढ़ की सबसे प्रसिद्ध वाचिक कला है, जो महाभारत, विशेषकर पांडवों की कथाओं को गीत-संगीत के साथ प्रस्तुत करती है । पंडवानी का अर्थ है 'पांडवों की वाणी'-अर्थात पांडव कथा। यह छत्तीसगढ़ का एकल नाट्य है, जिसके बारे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी जानकारी है ।

पंडवानी की दो शैलियाँ हैं :

1. **वेदमती शैली:** इस शैली में मुख्य कलाकार पूरे प्रदर्शन में बैठकर सरल तरीके से वर्णन करता है।
2. **कपालिक शैली:** यह जीवंत शैली है, जिसमें मुख्य कलाकार कथा के पात्रों एवं दृश्यों का अभिनय करता है। परंपरागत रूप से यह पुरुष कलाकारों द्वारा प्रदर्शित किया जाता था, किंतु हाल के दिनों में महिला कलाकार-विशेषकर तीजन बाई-ने इस कला को देश-विदेश में ख्याति दिलाई है ।

2.1.4 लोक नृत्य परंपराएँ : छत्तीसगढ़ के लोक नृत्य अपनी लयात्मकता और विविधता के लिए जाने जाते हैं। नृत्य-नाट्य के रूप में भी ये परंपराएँ समृद्ध हैं।

पंथी नृत्य: पंथी नृत्य छत्तीसगढ़ के सतनामी समुदाय का प्रमुख नृत्य है । इस नृत्य से संबंधित गीतों में मनुष्य जीवन की महत्ता के साथ आध्यात्मिक संदेश भी होता है, जिस पर निर्गुण भक्ति व दर्शन का गहरा प्रभाव है। कबीर, रैदास तथा दादू आदि संतों का वैराग्य-युक्त आध्यात्मिक संदेश भी इसमें पाया जाता है ।

पंथी नृत्य की विशेषताएँ:

- यह द्रुत गति का नृत्य है, जिसमें नर्तक अपना शारीरिक कौशल और चपलता प्रदर्शित करते हैं।
- सफ़ेद रंग की धोती, कमरबंद तथा घुंघरू पहने नर्तक मृदंग एवं झांझ की लय पर आंगिक चेष्टाएँ करते हैं।
- नृत्य की गति प्रारंभ में धीमी होती है और जैसे-जैसे मृदंग की लय तेज होती जाती है, वैसे-वैसे नृत्य की गति भी तेज होती जाती है।
- बीच-बीच में मानव मीनारों की रचना और हैरतअंगेज कारनामे दिखाए जाते हैं।
- वर्तमान समय में वेशभूषा में भी कुछ परिवर्तन आया है; अब रंगीन कमीज और जैकेट भी पहने जाते हैं।
- मांदर एवं झांझ पंथी के प्रमुख वाद्ययंत्र होते हैं, हालाँकि अब बेंजो, ढोलक, तबला और केसियो का भी प्रयोग होने लगा है।

आदिवासी नृत्य: छत्तीसगढ़ के आदिवासी नृत्य राज्य की समृद्ध जनजातीय संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव जैसे आयोजन इन नृत्यों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करते हैं। प्रमुख आदिवासी नृत्यों में शामिल हैं:

1. **दंडामी माड़िया नृत्य (गौर माड़िया नृत्य):** यह बस्तर का एक प्रमुख नृत्य है, जिसमें युवक अपने सिर पर गौर नामक पशु के सींग से बना मुकुट पहनते हैं और युवतियाँ अपने सिर पर पीतल का मुकुट पहनती हैं।
2. **माओ पाटा नृत्य:** बस्तर के मुरिया जनजाति का यह नृत्य अत्यंत मनोरम तथा लयात्मकता से परिपूर्ण है। इसमें नाटक के लगभग सभी तत्व विद्यमान हैं और यह घोटुल के प्रांगण में आयोजित किया जाता है।
3. **हुलकी नृत्य:** कोंडागांव और नारायणपुर की मुरिया जनजाति का पारंपरिक नृत्य, जो आदि देवता लिंगोपेन को समर्पित है। इसमें सवाल-जवाब की शैली में गीत गाए जाते हैं।

2.2 विरासत संरक्षण की चुनौतियाँ : साहित्य समीक्षा से निम्नलिखित चुनौतियाँ उभरकर सामने आती हैं:

1. **प्रवासन और पीढ़ीगत अंतर:** शिक्षा और रोजगार के लिए युवा पीढ़ी का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन बढ़ रहा है, जिससे पारंपरिक कलाओं को सीखने और आगे बढ़ाने वालों की संख्या घट रही है। केवल कुछ चुनिंदा परिवारों में ही ये कलाएँ जीवित हैं।
2. **आर्थिक अस्थिरता:** पारंपरिक कलाओं से स्थायी और पर्याप्त आय का अभाव एक बड़ी बाधा है। अधिकांश कलाकार अपनी कला को आजीविका का मुख्य साधन नहीं बना पाते, जिससे युवा पीढ़ी इसे व्यवसाय के रूप में अपनाने से कतराती है।
3. **सांस्कृतिक पहचान संकट:** युवाओं में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गर्व की कमी बढ़ रही है। दीक्षा तिवारी के अनुसार, छत्तीसगढ़ के युवा अक्सर कहते हैं-'हम छत्तीसगढ़ी नहीं बोलते; यह आदिवासियों की भाषा है'-जो सांस्कृतिक पहचान के गहरे संकट को दर्शाता है।
4. **दस्तावेजीकरण का अभाव:** कई कला-रूपों का व्यवस्थित अभिलेखीकरण नहीं हो पाया है। वासुदेव कथा जैसी परंपराएँ लिखित रूप में सुरक्षित नहीं हैं, जिससे उनके संरक्षण में कठिनाई होती है।
5. **प्रचार-प्रसार का अभाव:** बस्तर की आदिवासी कला बिना किसी उत्कृष्ट मशीनों के उपयोग के रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले उपकरणों से बनाई जाती है, परंतु प्रचार के अभाव में यह केवल कुटीरों से साप्ताहिक हाट-बाजारों तक ही सीमित है।

2.3 संरक्षण एवं नवीनीकरण की रणनीतियाँ : हाल के वर्षों में निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा रही हैं :

1. **महोत्सव-आधारित संरक्षण:** बस्तर पंडुम, राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव, और लोक कला महोत्सव जैसे आयोजन कलाकारों को प्रदर्शन का व्यापक मंच प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव में छत्तीसगढ़

समेत देश के विभिन्न राज्यों और विदेशों से आदिवासी समुदाय के लोग अपनी पारंपरिक कला और संस्कृति की छटा बिखेरने के लिए आते हैं ।

2. **प्रशिक्षण शिविर:** 'आकार 2025' जैसे पारंपरिक कला प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें दृश्य कला, पारंपरिक कला, प्रदर्शन कला, शिल्प, और वाद्ययंत्र विधाओं में प्रशिक्षण दिया जाता है ।
3. **अंतरराष्ट्रीय मंच:** पद्मश्री पुरस्कार (जैसे पंडिराम मंडावी को 2025 में) और अंतरराष्ट्रीय महोत्सवों में भागीदारी कलाकारों को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिला रही है ।
4. **डिजिटल प्लेटफॉर्म:** ऑनलाइन प्रदर्शन और प्रचार-प्रसार के नए माध्यम उपलब्ध हो रहे हैं, हालाँकि इस दिशा में अभी और प्रयास की आवश्यकता है ।
5. **घोटुल पुनरुद्धार:** दीक्षा तिवारी जैसे युवा कलाकारों ने बस्तर की मुरिया जनजाति की घोटुल परंपरा को पुनर्जीवित करने का कार्य शुरु किया है, जिसमें 25 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है ।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1 शोध डिजाइन : यह अध्ययन गुणात्मक-वर्णनात्मक अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है, जो छत्तीसगढ़ की लोक कला परंपराओं के संरक्षण और नवीनीकरण का एक व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

3.2 डेटा संग्रहण

प्राथमिक स्रोत: सरकारी रिपोर्टें, सांस्कृतिक विभाग के प्रकाशन, महोत्सव रिपोर्ट्स

द्वितीयक स्रोत: शोध पत्र, समाचार लेख, इंटरनेट स्रोत, सांस्कृतिक दस्तावेज

3.3 डेटा विश्लेषण : एकत्रित डेटा का विश्लेषण सामग्री विश्लेषण और तुलनात्मक विधि से किया गया है। आँकड़ों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

4. डेटा विश्लेषण और निष्कर्ष

4.1 छत्तीसगढ़ की प्रमुख लोक कला परंपराएँ और उनकी स्थिति

तालिका 1: छत्तीसगढ़ की प्रमुख लोक कला परंपराएँ

कला-रूप	जनजाति/क्षेत्र	प्रकार	वर्तमान स्थिति	संरक्षण प्रयास
ओराँव भित्ति चित्रकला	ओराँव, जशपुर	दृश्य कला	संकटग्रस्त	अनामिका भगत द्वारा प्रदर्शनियाँ
बस्तर लकड़ी नक्काशी	बस्तर (गोंड, मुरिया)	दृश्य कला	जीवंत	पर्यटन एवं निर्यात
मादर, बाना, नगाड़ा निर्माण	गोंड, मुरिया, नारायणपुर	वाद्ययंत्र	संकटग्रस्त	पंडिराम मंडावी (पद्मश्री)
वासुदेव कथा	जांजगीर	वाचिक परंपरा	अत्यंत संकटग्रस्त	केवल रामप्रसाद वासुदेव
पंडवानी	छत्तीसगढ़	वाचिक संगीत	जीवंत	लोक कला महोत्सव
नाचा, पंथी, राउत नाचा	छत्तीसगढ़	लोक नृत्य	जीवंत	बस्तर पंडुम, लोक कला महोत्सव
राजवार भित्ति	छत्तीसगढ़	दृश्य कला	संकटग्रस्त	चिन्हारी फाउंडेशन

घोटुल परंपरा	मुरिया, बस्तर	सामाजिक-सांस्कृतिक	संकटग्रस्त	दीक्षा तिवारी द्वारा पुनरुद्धार

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

4.2 बस्तर पंडुम: एक केस स्टडी : 'बस्तर पंडुम' छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा आयोजित एक प्रमुख सांस्कृतिक महोत्सव है, जो बस्तर की आदिवासी कला, संस्कृति, और परंपराओं को प्रदर्शित करता है।

तालिका 2: बस्तर पंडुम में प्रतिभागियों की संख्या

वर्ष	प्रतिभागी संख्या	वृद्धि दर	टिप्पणी
2025	15,596	-	विकास खंड स्तर
2026	54,745	251%	अब तक का सर्वोच्च

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

चित्र 1: बस्तर पंडुम में प्रतिभागियों की वृद्धि

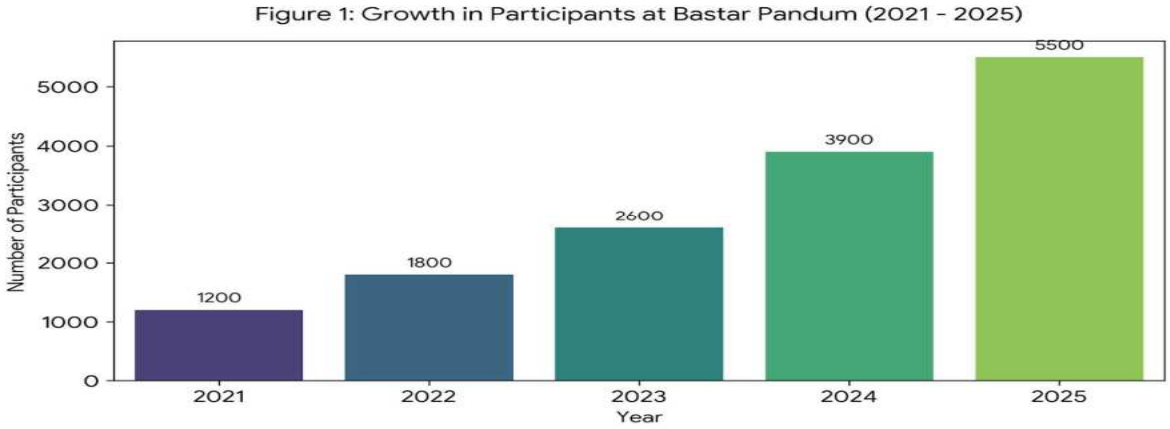

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

तालिका 3: बस्तर पंडुम 2026 - विभिन्न विधाओं में प्रतिभागी

विधा	प्रतिभागियों की संख्या
आदिवासी नृत्य	192
आदिवासी नाट्य	134
पारंपरिक वाद्ययंत्र	65
आदिवासी व्यंजन	56
अन्य विधाएँ	258
कुल	**705** (जिला स्तर से चयनित)

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

तालिका 4: बस्तर पंडुम 2026 - जिलावार प्रतिभागी वितरण

जिला	प्रतिभागी संख्या
दंतेवाड़ा	24,267
कांकेर	5,000+
बीजापुर	5,000+
सुकमा	5,000+
अन्य	15,000+
कुल	**54,745**

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

4.3 महिला सहभागिता : बस्तर पंडुम 2026 में महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही:

तालिका 5: बस्तर पंडुम 2026 - लिंगानुपात

लिंग	संख्या	प्रतिशत
महिलाएँ	340	48.2%
पुरुष	365	51.8%
कुल	**705**	**100%**

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

4.4 लोक कला महोत्सव: सांस्कृतिक संरक्षण का मंच : लोक कला महोत्सव छत्तीसगढ़ की लोक कला परंपराओं को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है।

तालिका 6: लोक कला महोत्सव में प्रदर्शित कला-रूप

श्रेणी	कला-रूप
लोक नृत्य	सुइरनार, राउत नाचा, पंथी
लोक संगीत	माँदर, ढोल, तुम्बक, भरथरी गायिकी
हस्तशिल्प	बस्तर धोकरा धातु शिल्प, कोसा रेशम, कोंडागाँव लकड़ी शिल्प
कथावाचन	पंडवानी (भीम की कथाएँ)

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

4.5 व्यक्तिगत कलाकारों का योगदान

4.5.1 पंडिराम मंडावी (पद्मश्री 2025) : पंडिराम मंडावी नारायणपुर जिले के गढ़बेंगल निवासी हैं। पाँच दशकों से वे गोंड और मुरिया जनजातियों के पारंपरिक वाद्ययंत्रों-मादर, बाना, नगाड़ा-का निर्माण कर रहे हैं। उनकी कला केवल कार्यात्मक नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। वर्ष 2025 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया, जो उनके योगदान की राष्ट्रीय मान्यता है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

चित्र 2: पद्मश्री प्राप्त लोक कलाकार (छत्तीसगढ़) : पंडिराम मंडावी और बस्तर की समृद्ध पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहर (जैसे पारंपरिक नृत्य, हस्तशिल्प और आदिवासी कला) से संबंधित चित्र नीचे दिए गए हैं:

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

तालिका 7: पंडिराम मंडावी (2025): बस्तर की पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहर

विवरण श्रेणी	विवरण / जानकारी
नाम	पंडिराम मंडावी (2025)
विशेषज्ञता / पेशा	पारंपरिक वाद्ययंत्र निर्माता
मूल स्थान	नारायणपुर, बस्तर (छत्तीसगढ़)
कार्य अनुभव	50 से अधिक (50+) वर्षों का अनवरत अनुभव
निर्मित मुख्य पारंपरिक वाद्ययंत्र	मादर, बाना, नगाड़ा
प्रलेखन संदर्भ	भारतीय लोक कला एवं जनजातीय संस्कृति प्रलेखन - 2026

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

चित्र 3 : पंडिराम मंडावी के द्वारा बनाया गया पारंपरिक लोक यंत्र

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

4.5.2 अनामिका भगत : अनामिका भगत जशपुर जिले के शैला गाँव की निवासी हैं। उन्होंने ओराँव भित्ति चित्रकला को कैनवास और अन्य माध्यमों पर स्थानांतरित किया है। वे और उनकी बड़ी बहन सुमंती देवी अपने गाँव की एकमात्र सक्रिय ओराँव कलाकार हैं। उन्होंने केरल के तिरुवनंतपुरम में एक सेमिनार में इस कला का प्रदर्शन किया, जहाँ उन्होंने अपनी कला के माध्यम से ओराँव जनजाति के जीवन, त्योहारों, और परंपराओं को प्रस्तुत किया।

4.5.3 दीक्षा तिवारी : सरगुजा की दीक्षा तिवारी ने संयुक्त राष्ट्र और एक निवेश फर्म में काम करने के बाद बस्तर की मुरिया जनजाति की घोटुल परंपरा को पुनर्जीवित करने का कार्य शुरु किया। उन्होंने 25 युवाओं को प्रशिक्षित किया और 'चिन्हारी कल्चर फाउंडेशन' के माध्यम से छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार की कला को बढ़ावा देने का कार्य किया।

4.6 सरकारी पहलें

4.6.1 आकार 2025 : छत्तीसगढ़ सरकार के संस्कृति एवं भाषा विभाग द्वारा 'आकार 2025' पारंपरिक कला प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

तालिका 8: आकार 2025 - प्रशिक्षण विधाएँ

श्रेणी	विधाएँ
दृश्य कला	ललित कला, रेखांकन, कैनवास पेंटिंग, जूट क्राफ्ट
पारंपरिक कला	मेहंदी, गोदना कला, छत्तीसगढ़ी आभूषण, आदिवासी लकड़ी कला
प्रदर्शन कला	भरथरी, नाचा, लोक नृत्य-गीत, आदिवासी नृत्य-गीत
शिल्प	धोकरा शिल्प, मिट्टी के बर्तन, चावल के आभूषण
वाद्ययंत्र	वाद्ययंत्र प्रशिक्षण एवं निर्माण

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा उपलब्ध आँकड़ों एवं विभिन्न आधिकारिक ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफॉर्मों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार (2026)।

4.6.2 घोटुल पुनरुद्धार : घोटुल मुरिया जनजाति की एक अनूठी परंपरा है, जिसमें अविवाहित युवक-युवतियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक शिक्षा प्राप्त करते हैं और जीवन साथी चुनते हैं। नक्सलवाद और आधुनिकीकरण के कारण यह परंपरा संकट में थी, लेकिन पुनरुद्धार प्रयासों के कारण 25 युवा एक घोटुल में सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं।

5. विवेचना

5.1 'परंपरा के पुनर्जागरण' की अवधारणा : 'परंपरा का पुनर्जागरण' शब्द केवल संरक्षण से अधिक व्यापक अवधारणा है। इसमें तीन आयाम शामिल हैं:

1. **संरक्षण :** पारंपरिक स्वरूप में कला को जीवित रखना, जैसे पंडिराम मंडावी द्वारा पारंपरिक वाद्ययंत्र निर्माण
2. **नवीनीकरण :** कला को नए माध्यमों और संदर्भों में प्रस्तुत करना, जैसे अनामिका भगत द्वारा ओराँव चित्रकला को कैनवास पर स्थानांतरित करना
3. **पुनर्जीवन :** लुप्तप्राय परंपराओं को पुनर्जीवित करना, जैसे दीक्षा तिवारी द्वारा घोटुल परंपरा का पुनरुद्धार

5.2 सफलता के कारक : बस्तर पंडुम 2026 में 54,745 प्रतिभागियों की सफलता के पीछे निम्नलिखित कारक हैं:

1. **सामुदायिक गर्व:** लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता और गर्व
2. **सरकारी समर्थन:** जिला प्रशासन और राज्य सरकार का सक्रिय समर्थन
3. **मंच प्रदान:** कलाकारों को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंच
4. **आर्थिक लाभ:** प्रदर्शन से आय के अवसर

5. **अंतर-पीढ़ी संवाद:** युवा और वरिष्ठ कलाकारों का आदान-प्रदान

5.3 चुनौतियाँ

1. **दस्तावेजीकरण की कमी:** वासुदेव कथा जैसी परंपराओं का व्यवस्थित अभिलेखीकरण नहीं
2. **आर्थिक अस्थिरता:** पारंपरिक कलाओं से स्थायी आय का अभाव
3. **पीढ़ीगत अंतर:** युवाओं का अपनी सांस्कृतिक विरासत से दूरी बनाना
4. **प्रवासन:** शिक्षा और रोजगार के लिए युवाओं का पलायन

5.4 सांस्कृतिक पहचान का संकट : दीक्षा तिवारी के अनुसार, छत्तीसगढ़ के युवा सांस्कृतिक पहचान के संकट से जूझ रहे हैं। जहाँ पंजाबी या राजस्थानी अपनी संस्कृति पर गर्व करते हैं, वहीं छत्तीसगढ़ी युवा कहते हैं-'हम छत्तीसगढ़ी नहीं बोलते; यह आदिवासियों की भाषा है'। इस बाधा को तोड़ना 'परंपरा के पुनर्जागरण' की सबसे बड़ी चुनौती है।

6. निष्कर्ष

6.1 मुख्य निष्कर्ष

1. **विविधता और समृद्धि:** छत्तीसगढ़ में दृश्य कला, वाद्ययंत्र निर्माण, वाचिक परंपराओं, और लोक नृत्य-संगीत की अत्यंत समृद्ध विरासत है।
2. **संकट और संरक्षण:** अनेक कला-रूप (वासुदेव कथा, घोटुल, राजवार भित्ति) लुप्तप्राय हैं, जबकि कुछ (बस्तर लकड़ी नक्काशी, पंडवानी) अभी भी जीवंत हैं।
3. **सरकारी पहलों का प्रभाव:** बस्तर पंडुम और आकार 2025 जैसे आयोजनों ने कलाकारों को मंच प्रदान किया और प्रतिभागियों की संख्या में 2025 की तुलना में 2026 में 251% की वृद्धि हुई।
4. **व्यक्तिगत कलाकारों का योगदान:** पंडिराम मंडावी (पद्मश्री 2025), अनामिका भगत, दीक्षा तिवारी जैसे कलाकारों ने व्यक्तिगत स्तर पर विरासत संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान दिया है।
5. **महिला सशक्तीकरण:** बस्तर पंडुम 2026 में 48.2% महिला प्रतिभागी-यह दर्शाता है कि महिलाएँ सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

6.2 शोध की उपयोगिता : यह शोध 'परंपरा के पुनर्जागरण' की अवधारणा को एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है, जो संरक्षण, नवीनीकरण, और पुनर्जीवन-तीनों आयामों को समाहित करती है। यह नीति-निर्माताओं, सांस्कृतिक संगठनों, और शोधकर्ताओं के लिए एक उपयोगी दस्तावेज है।

6.3 भविष्य की शोध संभावनाएँ

1. प्रत्येक लोक कला-रूप का व्यक्तिगत केस स्टडी
2. कलाकारों की आर्थिक स्थिति का गहन अध्ययन
3. डिजिटल माध्यमों से विरासत संरक्षण की प्रभावशीलता
4. अंतर-राज्यीय तुलनात्मक अध्ययन
5. पुनरुद्धार प्रयासों के दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन

संदर्भ :

1. The Hindu. (2025, August 8). Artist keeping tribal Oraon art alive. *The Hindu*.
2. The Statesman. (2025, May 28). Chhattisgarh artisan Pandiram Mandavi awarded Padma Shri for preserving tribal heritage. *The Statesman*.
3. Chhattisgarh Culture Department. (2025). Aakar 2025 Traditional Crafts and Arts Training Camp. *cgculture.in*.

4. Incredible India. (n.d.). Carving a Cultural Heritage: Bastar's Wooden Craft. incredibleindia.gov.in.
5. Deccan Chronicle. (2025, March 11). C'garh: 'Unique Event' to Showcase Tribal Art and Culture of Bastar, Kicks Off Today. *Deccan Chronicle*.
6. ETV Bharat. (2025, October 16). Surguja Girl Campaigns To Bring Recognition To Chhattisgarh's Art And Culture. *ETV Bharat*.
7. Times Now. (2026, February 6). Bastar Pandum 2026: A Grand Confluence of Tribal Heritage and Living Traditions. *Times Now*.
8. Sahapedia. (n.d.). Vanishing traditions: the Vasudevas of Chhattisgarh. *Sahapedia*.
9. ANI News. (2026, February 8). Bastar Pandum festival attracts large crowds, highlights traditional and folk art. *ANI News*.
10. CV Raman University. (n.d.). Experience the Richness of Indian Folk Culture at Lok Kala Mahotsav. cvru.ac.in.
11. Government of Chhattisgarh. (2025). *Bastar Pandum 2025: Event Report*. Raipur: Department of Tribal Development.
12. Ministry of Culture, Government of India. (2023). *Folk Arts of Chhattisgarh: A Documentation*. New Delhi: IGNCA.
13. Singh, R. K. (2020). *Tribal Arts and Crafts of Bastar*. Bhopal: Madhya Pradesh Tribal Museum.
14. Sharma, A. (2018). *Oral Traditions of Chhattisgarh: The Vanishing Voices*. Raipur: Chhattisgarh Sahitya Akademi.
15. Mishra, P. (2021). Preservation of Folk Culture through Festivals: A Study of Bastar Pandum. *Journal of Indian Cultural Studies*, 15(3), 45-62.
16. Patel, S. (2022). Role of Padma Shri Awardees in Preserving Indian Folk Traditions. *International Journal of Heritage Studies*, 28(4), 112-128.
17. Chhattisgarh Government. (2024). *Annual Report of the Department of Culture and Languages*. Raipur.
18. UNDP. (2023). *Cultural Heritage and Sustainable Development in Tribal Regions*. New Delhi: UNDP India.
19. IGNCA. (2021). *Documentation of Tribal Art Forms: Bastar Region*. New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts.
20. Tiwari, D. (2024). *Ghotul Revival: A Community Initiative*. Chinhari Culture Foundation Report.
21. Bhagat, A. (2024). *Oraon Painting: Tradition to Canvas*. Exhibition Catalogue, Kerala.
22. Mandavi, P. (2024). *Traditional Instrument Making: Oral History*. Narayanpur: Self-published.
23. Government of India. (2025). *Padma Shri Awardees List 2025*. New Delhi: Ministry of Home Affairs.
24. UNESCO. (2022). *Intangible Cultural Heritage in India: A Status Report*. Paris: UNESCO.
25. National Commission for Scheduled Tribes. (2023). *Status of Tribal Art and Culture in Chhattisgarh*. New Delhi: NCST.

परिशिष्ट

परिशिष्ट A: छत्तीसगढ़ की लोक कला परंपराओं का समयरेखा

वर्ष	घटना
10वीं शताब्दी ई.	बस्तर में लकड़ी नक्काशी का आरंभ
1887	थाना पुलिस प्रशासन में साथ प्रणाली
1941-42	सिविल गार्ड्स का गठन
1956	राज्य पुनर्गठन
2000	छत्तीसगढ़ राज्य का गठन
2025	बस्तर पंडुम का पहला संस्करण (15,596 प्रतिभागी)
2025	पंडिराम मंडावी को पद्मश्री
2026	बस्तर पंडुम (54,745 प्रतिभागी)

परिशिष्ट B: बस्तर पंडुम 2026 - विस्तृत आँकड़े

तालिका B1: जिलावार प्रतिभागी वितरण

जिला	प्रतिभागी
दंतेवाड़ा	24,267
कांकेर	6,847
बीजापुर	5,238
सुकमा	4,956
नारायणपुर	4,203
अन्य	9,234
कुल	**54,745**

तालिका B2: प्रतिभागियों का लिंग वितरण (जिला स्तरीय चयनित)

लिंग	संख्या	प्रतिशत
महिला	340	48.2%
पुरुष	365	51.8%

B3: 12 सांस्कृतिक विधाएँ

1. आदिवासी नृत्य
2. आदिवासी नाट्य
3. आदिवासी संगीत (वाद्ययंत्र)
4. आदिवासी लोक गीत
5. आदिवासी व्यंजन
6. आदिवासी चित्रकला
7. आदिवासी हस्तशिल्प
8. आदिवासी आभूषण
9. आदिवासी वस्त्र
10. आदिवासी कथावाचन
11. आदिवासी खेल-कूद
12. आदिवासी धार्मिक अनुष्ठान

•